पद ६

(राग: मुलतानी - ताल: धुमाळी)

येई येई श्रीमाणिका भक्तजनपालका।।धु.।। या हो मुनिमानस हंसा। कृष्णा तूं दारक भवकंसा। खलगज पंचानन वेषा। आठवी ब्रीदा आदिपुरुषा। कां रे उपेक्षिसी आम्हां। कीं श्रमलासी

भक्तकामा। सखया दीनजननीजनका।।१।। कवणें हो गर्भीं रिक्षयलें। मातें संकर्टीं सोडिवलें। प्रथम हो अंगिकारियलें। कां मग शंकित मन केलें। विश्वस्रष्टा तूं सकलज्ञाता। न जाणो आमच्या संचिता। भक्तसौभाग्य सुरपालना। करुणालया जगजीवना। सदया आद्य अवगुणनाशका।।२।। मुक्तजनपंकज तरणी। या हो त्वरित वेत्रपाणी। श्रीबयाकलागर्भचंद्रा। मनोहर धनत्रय देवेंद्रा। हनुमदनुज नरहरिक्षपा। प्रिय श्रीमनोहर गुरुभूपा। मोह मणिमल्ल मार्तांडा। प्रभु तूं पोषक ब्रह्मांडा। सच्चिदानंदा तमहारका।।३।।